इतिहास (027)
अंकन योजना
कक्षा XII: 2025-26

समय: 3 घंटे **पूर्णांक: 80**

खंड क		1x21=21
प्र संख्या	**बहुविकल्पीय प्रश्न**	**अंक**
1.	ख) लोथल	1
2.	ग) पुरातत्व-वनस्पतिज्ञ	1
3.	घ) छठी और चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के बीच, पांचाल सबसे शक्तिशाली महाजनपद बन गया।	1
4.	क) 1–ख, 2- ग, 3 -घ, 4- क	**1**
5.	घ) मनुस्मृति	1
6.	ख) अमरावती से प्राप्त बुद्ध को महल छोड़ते हुए दर्शाती एक मूर्ति **नोट: निम्नलिखित प्रश्न केवल दृष्टिबाधित अभ्यर्थियों के लिए प्रश्न संख्या 6 के स्थान पर हैं।** क) ऋग्वेद	1
7.	क) अशोकावदान	1
8.	ग) 1, 2, 4	1
9.	क) इब्न बतूता	1
10.	क) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।	1
11.	**विजयनगर साम्राज्य पर शासन करने वाला पहला राजवंश निम्नलिखित में से कौन सा** घ) संगम राजवंश	1
12.	घ) अमर-नायक सैन्य कमांडर थे जिन्हें राय द्वारा शासन करने के लिए क्षेत्र दिए गए थे।	1
13.	घ) मुल्क-आबादी	1
14.	ख) 1, 2, 3	1
15.	घ) 1, 2, 3, 4	1

16.	ख) जोतदार	1
17.	घ) 4, 3, 2, 1	1
18.	ग) चंद्रन देवनेसन	1
19.	घ) i – ई, ii – अ, iii – आ, iv – इ	1
20.	ग) पंडित जवाहरलाल नेहरू	1
21.	क) समाजवादी	1
खंड ख **लघु-उत्तरीय प्रश्न**		**3x6=18**
22.	इसमें कोई संदेह नहीं है कि पुरातात्विक विवरण हड़प्पा के केंद्रीय सत्ता के बारे में कोई त्वरित उत्तर नहीं देते है। केंद्रीय सत्ता के बारे में कई विचार दिए गए हैं। उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं: ● मोहनजोदड़ो में एक बड़ी इमारत मिली है, परंतु इससे संबद्ध कोई भव्य वस्तु नहीं मिली है। ● मोहनजोदड़ो के स्थल पर एक पत्थर की मूर्ति मिली है, जिसे 'पुजारी राजा' की संज्ञा दी गयी थी। ● लेकिन अभी तक हड़प्पा सभ्यता के लोगों की अनुष्ठान प्रथाओं को समझा नहीं जा सका है। ● यह जानने के लिए कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है कि अनुष्ठान करने वालों के पास कुछ राजनीतिक शक्ति भी थी या नहीं। किन्हीं तीन बिन्दुओं का वर्णन करें। **अथवा** हड़प्पावासियों ने निम्नलिखित तरीकों से दुनिया के अन्य भागों के साथ व्यापारिक संबंध बनाए रखे: ● पुरातात्विक खोजों से संकेत मिलता है कि हड़प्पावासियों के पश्चिमी एशिया के साथ व्यापारिक संबंध थे। ● ताँबा ओमान से आयात किया जाता था। रासायनिक विश्लेषणों से पता चला है कि ओमानी ताँबे और हड़प्पा की पुरावस्तुओं में निकल के अंश मिले हैं जो दोनों के सांझा उद्भव की तरफ संकेत देते हैं। ● कुछ ओमानी स्थानों पर काली मिट्टी की मोटी परत से लिपटे हड़प्पा के बर्तनों का एक विशिष्ट प्रकार पाया गया है। ● मेसोपोटामिया के स्थलों से हड़प्पा के बाट, मुहरें, पासे और मनके आदि भी मिले हैं। ● मेसोपोटामिया के लेखों में हड़प्पा के एक स्थल मेलुहा का भी उल्लेख है। इस स्थल से ताँबा, सोना, कार्नीलियन, लाजवर्द मणि और विभिन्न प्रकार की लकड़ियाँ आयात की जाती थीं। किन्हीं तीन बिन्दुओं का वर्णन करें।	3
23.	महाभारत के संकलन का कार्य 1919 में प्रसिद्ध विद्वान वी.एस. सुकथंकर के नेतृत्व में शुरू हुआ।	3

	अनेकों विद्वानों की एक टीम ने महाभारत का समालोचनात्मक संस्करण तैयार करने का कार्य शुरू किया। महाभारत के संकलन के विभिन्न चरण इस प्रकार थे: • विद्वानों ने देश के विभिन्न भागों से विभिन्न लिपियों में लिखी गई महाभारत की संस्कृत पांडुलिपियाँ एकत्रित कीं। • विद्वानों ने प्रत्येक पांडुलिपि से श्लोकों की तुलना की। उन्होंने ऐसे श्लोकों का चयन किया जो अधिकांश संस्करणों में पाये गए थे। • इन सामान्य श्लोकों को कई खंडों में प्रकाशित किया गया, जो 13,000 से अधिक पृष्ठों में फैले हुए थे। • इस परियोजना को पूरा होने में 47 वर्ष लगे। किन्हीं तीन बिन्दुओं का वर्णन करें।	
24	अल-बिरूनी को अपनी यात्रा के दौरान आने वाली समस्याओं का एहसास था। उसने महसूस किया कि कई अवरोधों ने उसकी समझ में बाधा डाली। इन अवरोधों का अध्ययन इस प्रकार किया जा सकता है: • पहला अवरोध भाषा थी। उसे संस्कृत और अरबी या फ़ारसी में बहुत अंतर लगा। संस्कृत अरबी और फ़ारसी से इतनी भिन्न थी कि विचारों और अवधारणाओं का एक भाषा से दूसरी भाषा में आसानी से अनुवाद नहीं किया जा सकता था। • दूसर अवरोध, उसे धार्मिक विश्वासों और प्रथाओं में बहुत अंतर लगा। • तीसरी अवरोध स्थानीय आबादी का अभिमान था। किन्हीं तीन बिन्दुओं का वर्णन करें।	3
25	सत्रहवीं शताब्दी में उत्तर भारत के एक औसत किसान की स्थिति इस प्रकार थी: 1) उत्तर भारत के एक औसत किसान के पास एक जोड़ी बैल और दो हल से अधिक नहीं होते थे। अधिकांश किसानों के पास इससे भी कम होता था। 2) गुजरात में, छह एकड़ जमीन रखने वाले किसानों को समृद्ध माना जाता था। 3) बंगाल में, औसत किसान की भूमि की ऊपरी सीमा 5 एकड़ थी। 4) एक किसान के पास 10 एकड़ जमीन होने पर उसे अमीर आसामी माना जाता था। 5) कृषि व्यक्तिगत मिल्कियत के सिद्धांत पर आधारित थी। किन्हीं तीन बिन्दुओं का वर्णन करें।	3
26	बंगाल में 18वीं शताब्दी के आरंभ में अंग्रेजों द्वारा पहाड़ियों के प्रति अपनाई गई नीतियों को निम्नलिखित तरीके से समझाया जा सकता है: • 1770 के दशक में अंग्रेजों ने पहाड़ियों के प्रति विनाश की नीति अपनाई और उन्हें खोजकर मारना शुरू कर दिया। • 1780 के दशक में भागलपुर के कलेक्टर ऑगस्टस क्लीवलैंड ने शांति की नीति प्रस्तावित की। • इस नीति के तहत पहाड़ी सरदारों को वार्षिक भत्ता देने का प्रस्ताव था और उन्हें अपने लोगों को नियंत्रित करने के लिए जिम्मेदार बनाया गया था। • उनसे यह भी अपेक्षा की जाती थी कि वे अपने इलाकों में व्यवस्था बनाए रखें और अपने लोगों के	3

	बीच अनुशासन बनाए रखें। ● परंतु कई पहाड़ी सरदारों ने वार्षिक भत्ता लेने से इनकार कर दिया। ● जिन्होंने भत्ता स्वीकार किया, उन्होंने अपने समुदाय के भीतर सत्ता को खो दिया। उन्हें औपनिवेशिक सरकार के वेतनभोगी मुखिया के रूप में देखा जाने लगा। किन्हीं तीन बिन्दुओं का वर्णन करें।	
27	● 1857 के विद्रोह के दौरान, एक स्पष्ट अफ़वाह थी कि भारतीय सिपाहियों को जानबूझकर एनफ़ील्ड राइफ़लें दी गई थीं, और इसकी गोलियों पर गाय और सूअर की चर्बी लगी हुई थी और उन कारतूसों को प्रयोग करने से उनकी जाति और धर्म भ्रष्ट हो जाएगा। ● अंग्रेजों ने सिपाहियों को समझाने की कोशिश की कि ऐसा नहीं था, बल्कि यह अफ़वाह थी कि नए कारतूसों में गाय और सूअर की चर्बी लगी हुई थी जो कि उत्तर भारत की सिपाही छावनियों में जंगल की आग की तरह फैल गई। ● यह एक ऐसी अफ़वाह है जिसकी उत्पत्ति का पता लगाया जा सकता है। राइफल इंस्ट्रक्शन डिपो के कमांडेंट कैप्टन राइट ने बताया कि जनवरी 1857 के तीसरे सप्ताह में दमदम में शस्त्रागार में काम करने वाले एक 'नीची जाति' के खलासी ने एक ब्राह्मण सिपाही से अपने लोटे से पानी पीने के लिए मांगा था। सिपाही ने यह कहते हुए मना कर दिया था कि नीची जाति के लोगों के छूने से लोटा अपवित्र हो जाएगा। खलासी ने कथित तौर पर जवाब दिया था, "वैसे भी तुम्हारी जाति भ्रष्ट होने वाली है, क्योंकि जल्द ही तुम्हें गाय और सूअर की चर्बी से सने कारतूस चबाने पड़ेंगे।" ● रिपोर्ट की सत्यता की पहचान नहीं की गई थी, लेकिन एक बार यह अफवाह फैल गई तो ब्रिटिश अधिकारियों के किसी भी आश्वासन से इसका प्रसार नहीं रुक सका और सिपाहियों में इसका डर फैल गया। ● ऐसी अफवाह थी कि ब्रिटिश सरकार ने हिंदुओं और मुसलमानों की जाति और धर्म को नष्ट करने के लिए एक साजिश रची है । ● इन आशंकाओं ने लोगों को कार्रवाई के लिए प्रेरित किया। कार्रवाई के आह्वान की प्रतिक्रिया को इस भविष्यवाणी से बल मिला कि 23 जून 1857 को प्लासी की लड़ाई की शताब्दी पर ब्रिटिश शासन का अंत हो जाएगा। किन्हीं तीन बिन्दुओं का वर्णन करें। **अथवा** 18वीं शताब्दी से अवध को कई शिकायतों का सामना करना पड़ा, जिसके कारण राजकुमारों, तालुकदारों, किसानों और सिपाहियों ने 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों के खिलाफ हाथ मिला लिया। निम्नलिखित ऐसे कारक थे जो शिकायतों को पैदा करने के लिए जिम्मेदार थे: ● 1801 में अवध पर सहायक गठबंधन लागू किया गया था, जिसने नवाब की अपने क्षेत्र पर शक्ति को सीमित कर दिया क्योंकि उसकी सैन्य शक्ति विघटित हो गई थी, ब्रिटिश सैनिकों ने राज्य में स्थिति संभाल ली थी और वह अवध के दरबार से जुड़े ब्रिटिश रेजिडेंट की सलाह के बिना कोई निर्णय नहीं ले सकता था। वह अब विद्रोही सरदारों और तालुकदारों पर नियंत्रण नहीं कर सकता था। अंग्रेजों की अवध के क्षेत्र को हासिल करने में दिलचस्पी बढ़ती गई क्योंकि यह उनके लिए आर्थिक और भौगोलिक रूप से महत्वपूर्ण था।	3

- इस विलय ने क्षेत्र के तालुकदारों को भी बेदखल कर दिया। अंग्रेजों के आगमन से पहले, वे शक्तिशाली थे और सशस्त्र अनुचर रखते थे, किले बनाते थे और स्वायत्तता का आनंद लेते थे। अंग्रेज तालुकदारों की शक्ति को बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं थे। विलय के तुरंत बाद, तालुकदारों को निरस्त्र कर दिया गया और उनके किले नष्ट कर दिए गए। पहला राजस्व समझौता, जिसे 'सारांश समझौता' के रूप में जाना जाता है, ने तालुकदारों की स्थिति और अधिकार को और कमज़ोर कर दिया। इस समझौते में जहाँ भी संभव था, तालुकदारों को हटाने की बात कही 18वीं शताब्दी से अवध को कई शिकायतों का सामना करना पड़ा, जिसके कारण राजकुमारों, तालुकदारों, किसानों और सिपाहियों ने 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों के खिलाफ हाथ मिला लिया। निम्नलिखित ऐसे कारक थे जो शिकायतों को पैदा करने के लिए जिम्मेदार थे:
- 1801 में अवध पर सहायक गठबंधन लागू किया गया था, जिसने नवाब की अपने क्षेत्र पर शक्ति को सीमित कर दिया क्योंकि उसकी सैन्य शक्ति विघटित हो गई थी, ब्रिटिश सैनिकों ने राज्य में स्थिति संभाल ली थी और वह अवध के दरबार से जुड़े ब्रिटिश रेजिडेंट की सलाह के बिना कोई निर्णय नहीं ले सकता था। वह अब विद्रोही सरदारों और तालुकदारों पर नियंत्रण नहीं कर सकता था। अंग्रेजों की अवध के क्षेत्र को हासिल करने में दिलचस्पी बढ़ती गई क्योंकि यह उनके लिए आर्थिक और भौगोलिक रूप से महत्वपूर्ण था।
- इस विलय ने क्षेत्र के तालुकदारों को भी बेदखल कर दिया। अंग्रेजों के आगमन से पहले, वे शक्तिशाली थे और सशस्त्र अनुचर रखते थे, किले बनाते थे और स्वायत्तता का आनंद लेते थे। अंग्रेज तालुकदारों की शक्ति को बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं थे। विलय के तुरंत बाद, तालुकदारों को निरस्त्र कर दिया गया और उनके किले नष्ट कर दिए गए। पहला राजस्व समझौता, जिसे 'सारांश समझौता' के रूप में जाना जाता है, ने तालुकदारों की स्थिति और अधिकार को और कमज़ोर कर दिया। इस समझौते में जहाँ भी संभव था, तालुकदारों को हटाने की बात कही गई।

खंड ग — 3x8=24

दीर्घ-उत्तरीय प्रश्न

28

मौर्य प्रशासन की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

- साम्राज्य में पाँच प्रमुख राजनीतिक केंद्र थे, अर्थात् राजधानी पाटलिपुत्र और चार प्रांतीय केंद्र - तक्षशिला, उज्जयिनी, तोसली और सुवर्णगिरि ।
- यह संभावना है कि प्रशासनिक नियंत्रण राजधानी और प्रांतीय केंद्रों के आसपास के क्षेत्रों में सबसे मजबूत था।
- इन केंद्रों को सावधानीपूर्वक चुना गया था, तक्षशिला और उज्जयिनी दोनों महत्वपूर्ण लंबी दूरी के व्यापार मार्गों पर स्थित थे, जबकि सुवर्णगिरि (शाब्दिक रूप से, स्वर्ण पर्वत) संभवतः कर्नाटक की सोने की खदानों के लिए महत्वपूर्ण था।
- संचार प्रणाली भूमि और नदी दोनों मार्गों पर मौजूद थी। यह साम्राज्य के अस्तित्व के लिए बहुत ज़रूरी थी।
- चूँकि केंद्र से प्रांतों तक की यात्रा में लंबा समय लग सकता था, इसलिए यात्रियों के लिए भोजन और सुरक्षा की व्यवस्था थी।

8

	• यह स्पष्ट है कि सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सेना एक महत्वपूर्ण साधन थी। मेगस्थनीज ने सैन्य गतिविधि के संचालन के लिए एक समिति और छह उपसमितियों का उल्लेख किया है। • इनमें से एक नौसेना की देखभाल करती थी, दूसरी परिवहन का प्रबंधन करती थी, तीसरी पैदल सैनिकों, चौथी घोड़ों, पाँचवीं रथों और छठी हाथियों के लिए जिम्मेदार थी। • दूसरी उपसमिति की गतिविधियाँ काफी विविध थीं जैसे कि उपकरण ले जाने के लिए बैलगाड़ियों की व्यवस्था करना, सैनिकों के लिए भोजन और जानवरों के लिए चारा जुटाना और सैनिकों की देखभाल के लिए सेवकों और शिल्पकारों की नियुक्ति करना। **अथवा** **6**वीं और **4**वीं शताब्दी ईसा पूर्व में, मगध (आधुनिक बिहार में) सबसे शक्तिशाली महाजनपद बन गया। आधुनिक इतिहासकार इसके कई कारण बताते है: • मगध एक ऐसा क्षेत्र था जहाँ खेती की उपज खास तौर पर अच्छी होती थी। • इसके अलावा, लोहे की खदानें (वर्तमान झारखंड में) आसानी से उपलब्ध थीं और उपकरणों और हथियारों के लिए संसाधन प्रदान करती थीं। • सेना का एक महत्वपूर्ण घटक हाथी, क्षेत्र के जंगलों में पाए जाते थे। • इसके अलावा, गंगा और उसकी सहायक नदियाँ सस्ते और सुविधाजनक आवागमन का साधन प्रदान करती थीं। • हालाँकि, मगध के बारे में लिखने वाले आरंभिक जैन और बौद्ध लेखकों ने इसकी शक्ति का श्रेय शासकों की नीतियों को दिया, महत्वाकांक्षी राजा जिनमें बिंबिसार, अजातशत्रु और महापद्मनंद सबसे प्रसिद्ध हैं, और उनके मंत्री, जिन्होंने उनकी नीतियों को लागू करने में मदद की। • मगध की दो राजधानियाँ, यानी राजगाह (राजगीर) और पाटलिपुत्र (पटना) के अपने-अपने लाभ थे। • राजगाह एक किलेबंद शहर था, जो पहाड़ियों के बीच स्थित था, इसलिए इस पर आसानी से कब्ज़ा नहीं किया जा सकता था। पाटलिपुत्र तक गंगा और उसकी सहायक नदियों के ज़रिए आसानी से पहुँचा जा सकता था। • मगध के विकास की परिणति मौर्य साम्राज्य के उदय के रूप में हुई। चंद्रगुप्त मौर्य, जिन्होंने साम्राज्य की स्थापना की (लगभग **321** ई.पू.), ने उत्तर-पश्चिम में अफ़गानिस्तान और बलूचिस्तान तक अपना नियंत्रण बढ़ाया, और उनके पोते अशोक, जो संभवतः आरंभिक भारत के सबसे प्रसिद्ध शासक थे, ने कलिंग (आधुनिक उड़ीसा) पर विजय प्राप्त की ।	
29	• संगम राजवंश के नाम से पहले राजवंश ने 1485 तक विजयनगर पर नियंत्रण रखा । उन्हें सलुवों, सैन्य कमांडरों द्वारा हटा दिया गया, जो 1503 तक सत्ता में रहे जब उन्हें तुलुवों ने उन्हे हटा दिया। • कृष्णदेव राय तुलुव वंश के थे। उन्होंने 1509 से 1529 ई. तक शासन किया। • तुंगभद्रा और कृष्णा नदियों (रायचूर दोआब) के बीच की भूमि 1512 में हासिल की गई थी। • उड़ीसा के शासकों को 1514 में परास्त कर दिया गया) और 1520 में बीजापुर के सुल्तान को बुरी तरह पराजित किया गया।	8

- हालाँकि राज्य हमेशा सामरिक रूप से तैयार रहता था, लेकिन फिर भी यह अद्वितीय शांति और समृद्धि की स्थितियों में फला-फूला।
- कृष्णदेव राय को कुछ बेहतरीन मंदिरों के निर्माण और कई महत्वपूर्ण दक्षिण भारतीय मंदिरों में भव्य गोपुरम जोड़ने का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने विजयनगर के पास अपनी मां के नाम पर नगलपुरम नामक एक उपनगरीय शहर भी बसाया।
- विजयनगर के सबसे प्रसिद्ध शासक कृष्णदेव राय ने तेलुगु में शासनकला पर एक कृति लिखी जिसे अमुक्तमल्यद के नाम से जाना जाता है। यह तेलगु भाषा में लिखी गयी थी ।
- हालाँकि सुल्तानों की सेनाएँ विजयनगर शहर के विनाश के लिए जिम्मेदार थीं, लेकिन धार्मिक मतभेदों के बावजूद सुल्तानों और रायों के बीच संबंध हमेशा या अनिवार्य रूप से शत्रुतापूर्ण नहीं थे। उदाहरण के लिए, कृष्णदेव राय ने सल्तनत में सत्ता के कुछ दावेदारों का समर्थन किया।
- बरबोसा, पेस और फर्नावो नूनिज़ जैसे कई विदेशी यात्रियों ने विजयनगर साम्राज्य के अच्छे प्रशासन और समृद्धि के बारे में लिखा।
- अंत में, यह स्पष्ट है कि कृष्णदेव राय विजयनगर साम्राज्य के सभी शासकों में सबसे महान थे।

अथवा

पंद्रहवीं शताब्दी में फारस के शासक द्वारा कालीकट (**कोज़ीकोड**) में भेजे गए दूत अब्दुर रज्जाक किलेबंदी से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने किले की सात पंक्तियों का उल्लेख किया। यह निम्नलिखित विवरणों से स्पष्ट है:

- विजयनगर शहर के विभिन्न हिस्से विशाल किले की दीवारों से घिरे हुए थे।
- ये किले न केवल शहर बल्कि इसके कृषि क्षेत्र और जंगलों को भी घेरे हुए थे। सबसे बाहरी दीवार शहर के आसपास की पहाड़ियों को जोड़ती थी।
- यह विशाल राजगिरी संरचना थोड़ी से शुण्डाकार थी । निर्माण में कहीं भी गारे या या किस वस्तु का इस्तेमाल नहीं किया गया था।
- पत्थर के टुकड़े फानाकार थे, जिसके कारण वे अपने स्थान पर टिके रहते थे। दीवारों के अंदर का भाग मिट्टी और मलवे के मिश्रण का बना हुआ था ।
- वर्गाकार तथा आयताकार बुर्ज बाहर की ओर निकले हुए थे।
- इस किलेबंदी के बारे में सबसे खास बात यह थी कि इसने कृषि क्षेत्रों को घेर रखा था।
- अब्दुर रज्जाक ने उल्लेख किया कि पहली, दूसरी और तीसरी दीवारों के बीच जुते हुए खेत, बगीचे और आवास हैं।
- दूसरी किलेबंदी नगरीय केंद्र के आंतरिक भाग के चारों ओर बनी हुई थी, और तीसरी से शासकीय केंद्र को घेरा गया था जिसमें महत्वपूर्ण इमारतों के प्रत्येक समूह को अपनी ऊँची दीवारों से घेरा गया था।
- दुर्ग में प्रवेश के लिए अच्छी तरह सुरक्षित प्रवेशद्वार थे, जो शहर को मुख्य सड़कों से जोड़ते थे। प्रवेशद्वार विशिष्ट स्थापत्य के नमूने थे जो अक्सर उन संरचनाओं को परिभाषित करते थे जिनमें प्रवेश को वे नियंत्रित करते थे।
- पुरातत्वविदों ने शहर के अंदर और शहर से बाहर जाने वाली सड़कों का अध्ययन किया है। इनकी पहचान प्रवेशद्वारों से होकर जाने वाले रास्तों के अनुरेखण तथा फर्श वाली सड़कों की खोजों से की गयी है ।
- सड़कें आम तौर पर पहाड़ी भूभाग से बचकर घाटियों के बीच से होकर ही इधर-उधर घूमती थी
- कुछ सबसे महत्वपूर्ण सड़कों में से कई मंदिर के प्रवेशद्वारों से आगे बढ़ी हुई थी और इनके दोनों

	ओर बाज़ार थे । किन्हीं आठ बिन्दुओं का वर्णन करें।	
30	निजी पत्र और आत्मकथाएँ व्यक्ति के जीवन और विचारों का महत्वपूर्ण स्रोत हैं। हमारे कई स्वतंत्रता संग्राम नेताओं ने आत्मकथाएँ और पत्र लिखे और आज वे उनके और इतिहास के बारे में हमारे महान अभिलेख हैं। **1) निजी पत्र:** कई पत्र व्यक्तियों को लिखे जाते हैं, और इसलिए व्यक्तिगत होते हैं, लेकिन वे जनता के लिए भी होते हैं। पत्रों की भाषा अक्सर इस एहसास से भी तय होती है कि वे एक दिन प्रकाशित हो सकते हैं। वे हमें किसी व्यक्ति के निजी विचारों की झलक देते हैं। पत्रों में हम लोगों को अपना गुस्सा और दर्द, अपनी निराशा और चिंता, अपनी आशाओं और कुंठाओं को व्यक्त करते हुए देखते हैं, जिस तरह से वे खुद को सार्वजनिक बयानों में व्यक्त नहीं कर सकते हैं। गांधीजी नियमित रूप से अपने पत्रिका हरिजन में राष्ट्रीय आंदोलनों के दौरान दूसरों द्वारा लिखे गए पत्रों को प्रकाशित करते थे। नेहरू ने राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान उन्हे लिखे गए पुराने पत्रों का एक संकलन तैयार किया जिसका नाम 'बंच ऑफ ओल्ड लेटर्स' (पुराने पत्रों का पुलिंदा) था। **2) आत्मकथाएँ:** आत्मकथाएँ इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए बहुत महत्वपूर्ण स्रोत हैं। वे हमें अतीत का लेखा-जोखा देती हैं यानी मानवीय विवरणों के हिसाब से काफी भरपूर होता है । आत्मकथाएँ अक्सर स्मृति से लिखी गई पूर्वव्यापी कहानियाँ होती हैं। वे हमें बताती हैं कि लेखक क्या याद रख पाया, उसने क्या महत्वपूर्ण समझा या क्या बता रहा था या कोई व्यक्ति कैसे चाहता था कि उसके जीवन को दूसरे लोग देखें। महात्मा गांधी की आत्मकथा यानी 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' हमें महात्मा गांधी के जीवन की एक झलक देते हैं। ये स्रोत आधिकारिक खातों से अलग थे। यह निम्नलिखित बिंदुओं में प्रकट होता है: **1) सरकारी रिकॉर्ड:** सरकारी रिकॉर्ड अतीत को फिर से बनाने के लिए एक और महत्वपूर्ण स्रोत हैं। उस समय पुलिसकर्मियों और अन्य अधिकारियों द्वारा लिखे गए पत्र और रिपोर्ट गुप्त थे, लेकिन अब उन्हें अभिलेखागार में देखा जा सकता है। ऐसा ही एक स्रोत 20वीं सदी की शुरुआत से गृह विभाग द्वारा तैयार की गई पाक्षिक रिपोर्ट है। ये रिपोर्ट स्थानीय पुलिस की मार्फत दी गई जानकारी पर आधारित थीं, लेकिन अक्सर वही व्यक्त करती थीं जो अधिकारी देखते थे या जिस पर विश्वास करना चाहते थे। उदाहरण के लिए, नमक सत्याग्रह के समय की पाक्षिक रिपोर्टों में यह देखा गया है कि गृह विभाग यह मानने को तैयार नहीं था कि महात्मा गांधीजी के कार्यों के प्रति जनता में कोई व्यापक जनसमर्थन पैदा हुआ है। **2) समाचार पत्र रिकॉर्ड:** एक और महत्वपूर्ण स्रोत समकालीन समाचार पत्र हैं। भारतीय और विदेशी दोनों ही समाचार पत्रों ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और गांधीजी के राजनीतिक जीवन की खबरों को कवर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। समाचार पत्रों ने यह भी दर्शाया कि आम भारतीय उनके बारे में क्या सोचते थे। हालाँकि, समाचार पत्रों के लेखों को निष्पक्ष नहीं माना जाना चाहिए। वे उन लोगों द्वारा प्रकाशित किए गए थे जिनके अपने राजनीतिक विचार और वैश्विक दृष्टिकोण थे। इन विचारों ने यह तय किया कि क्या प्रकाशित किया गया और घटनाओं की रिपोर्टिंग किस तरह की गई। **अथवा** • महात्मा गांधी 15 अगस्त 1947 को राजधानी में आयोजित समारोह में मौजूद नहीं थे। वे कलकत्ता	8

	में थे, लेकिन उन्होंने वहां किसी समारोह में भाग नहीं लिया और न ही झंडा फहराया। ● उन्होंने खुद को समारोहों से अलग रखा क्योंकि उनका मानना था कि स्वतंत्रता एक अस्वीकार्य कीमत पर मिली है, यानी राष्ट्र के विभाजन के साथ । ● उन्होंने समुदायों के बीच आपसी विश्वास और भरोसे की भावना का निर्माण करने की कोशिश की। वे भारत और पाकिस्तान में विस्थापित लोगों के लिए चिंतित थे। ● स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, गांधीजी ने खुद को राजनीतिक कार्यों और व्यस्तताओं से अलग रखा। उन्होंने लोगों को शांत करने, अस्पतालों और शरणार्थी शिविरों का दौरा करने और परेशान लोगों को सांत्वना देने पर ध्यान केंद्रित किया। ● उन्होंने सिखों, हिंदुओं और मुसलमानों से अतीत को भूलकर एक दूसरे की ओर भाईचारे और सहयोग का हाथ बढ़ाने की अपील की। ● उन्होंने कहा कि बुरी घड़ी बीत चुकी है और सभी भारतीयों को सभी वर्गों और धर्मों की समानता के लिए मिलकर काम करना चाहिए। उन्होंने यहां तक सोचा कि भले ही भारत और पाकिस्तान भौगोलिक और राजनीतिक रूप से विभाजित हैं, लेकिन दिल से हम दोस्त और भाई रहेंगे और शेष विश्व के लिए एक रहेंगे । ● जब भारत को आजादी मिली, तब गांधीजी बंगाल में थे, बंगाल में शांति लाने के बाद वे दिल्ली चले गए और वे लोगों को सांत्वना देने के लिए पंजाब जाने को तैयार थे। ● इसलिए, यह कहा जा सकता है कि अपने अंतिम दिनों में गांधीजी बिना किसी राजनीतिक उद्देश्य के दबाव के शांति लाने के लिए समय बिता रहे थे। वे मानवता की सेवा कर रहे थे। इसलिए, उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए, विद्वानों ने स्वतंत्रता के बाद के महीने को गांधीजी का 'श्रेष्ठतम क्षण' बताया।	
	खंड घ **स्रोत आधारित प्रश्न**	3x4=12
31	**31.1.** चरित लेखन किसी संत या धार्मिक नेता की जीवनी होती है। संतचरित्र अक्सर संत की उपलब्धियों की प्रशंसा करते हैं और हमेशा तथ्यात्मक रूप से सही नहीं होते। वे महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे हमें उस परंपरा के अनुयायियों की विश्वासों के बारे में बताते हैं। **31.2.** विश्व अनिश्चयशील है (अनिच्चा) और निरंतर बदल रहा है; यह निष्प्राण भी है (अनत्ता) क्योंकि इसमें कुछ भी स्थायी या शाश्वत नहीं है। इस क्षणभंगुर संसार में दुःख मानव अस्तित्व का अभिन्न अंग है। कठोर तपस्या और आत्म-भोग के बीच संयम के मार्ग पर चलकर ही मनुष्य इन सांसारिक कष्टों से ऊपर उठ सकता है। (कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु दिया जा सकता है) (कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु दिया जा सकता है) **31.3.** कला इतिहासकारों को बौद्ध मूर्तिकला को समझने के लिए बुद्ध की चरित लेखन से परिचित होना पड़ा। बुध चरित लेखन के अनुसार, बुद्ध ने एक पेड़ के नीचे ध्यान करते हुए ज्ञान प्राप्त किया था। कई शुरुआती मूर्तिकारों ने बुद्ध को मानव रूप में नहीं दिखाया - इसके बजाय, उन्होंने प्रतीकों के माध्यम से उनकी उपस्थिति दिखाई। रिक्त स्थान का मतलब बुद्ध के ध्यान को इंगित करना था, और स्तूप का मतलब महापरिनिर्वाण को दर्शाना था। एक और अक्सर इस्तेमाल किया जाने वाला प्रतीक	**1+1+2 =4**

	चक्र था। यह सारनाथ में दिए गए बुद्ध के पहले उपदेश का प्रतीक था। जैसा कि स्पष्ट है, ऐसी मूर्तियों को अक्षरशः नहीं समझा जा सकता है - उदाहरण के लिए, पेड़ केवल एक पेड़ के लिए नहीं बल्कि बुद्ध के जीवन में एक घटना का प्रतीक है। ऐसे प्रतीकों को समझने के लिए, इतिहासकारों को उन लोगों की परंपराओं से परिचित होना चाहिए जिन्होंने इन कलाकृतियों का निर्माण किया है।	
32	**32.1.** हाँ, तांत्रिक परंपरा वैदिक परंपरा से अलग है क्योंकि वैदिक परंपरा अक्सर उन प्रथाओं की निंदा करती थी जो ईश्वर की उपासना के लिए मंत्रों के उच्चारण के साथ यज्ञों के संपादन से परे थी। दूसरी ओर, तांत्रिक प्रथाओं में लगे लोगों ने अक्सर वैदिक सत्ता को नजरअंदाज किया। (कोई अन्य बिंदु)। **32.2.** हाँ, तांत्रिक प्रथाओं ने कुछ हद तक समतावादी समाज की धारणा को जन्म दिया क्योंकि न तो लिंग और न ही जातिगत भेदभाव था। **32.3.** तांत्रिक प्रथाओं ने शैव धर्म के साथ-साथ बौद्ध धर्म को भी प्रभावित किया, खासकर उपमहाद्वीप के पूर्वी, उत्तरी और दक्षिणी हिस्सों में।	**2+1+1 =4**
33	**33.1.** राष्ट्रीय नेता पृथक निर्वाचन क्षेत्रों की मांग का विरोध इसलिए कर रहे थे क्योंकि एकीकृत राष्ट्र राज्य के निर्माण के साथ अंतर्निहित चिंता थी। इसने राष्ट्र को विभाजित किया, रक्तपात किया और विभाजन को जन्म दिया। (कोई एक बिंदु) **33.2.** कोई भी पृथक निर्वाचिका का समर्थन नहीं करेगा क्योंकि यह अलगाववाद को जन्म देता है। यह अल्पसंख्यकों को अलग-थलग कर देगा, और वे सरकार के भीतर अपनी आवाज को प्रभावी ढंग से नहीं रख पाएंगे। यह राष्ट्र और अल्पसंख्यकों दोनों के लिए हानिकारक है। यह एकजुट राष्ट्र के लिए बाधा होगी। (कोई अन्य दृष्टिकोण) **33.3.** 27 अगस्त 1947 को मद्रास के बी. पोकर बहादुर ने पृथक निर्वाचिका को जारी रखने के लिए एक प्रभावशाली दलील दी। गोविंद बल्लभ पंत बहादुर से सहमत थे कि लोकतंत्र की सफलता का आकलन लोगों के विभिन्न वर्गों के बीच पैदा हुए विश्वास से किया जाना चाहिए। वे इस बात से भी सहमत थे कि एक स्वतंत्र राज्य में प्रत्येक नागरिक के साथ इस तरह से व्यवहार किया जाना चाहिए कि "न केवल उसकी भौतिक आवश्यकताएं बल्कि आत्म-सम्मान की उसकी आध्यात्मिक भावना भी संतुष्ट हो" और बहुल समुदाय का यह दायित्व है कि वह अल्पसंख्यकों की समस्याओं को समझने का प्रयास करे और उनकी आकांक्षाओं के साथ सहानुभूति रखे। (कोई एक बिंदु)	**1+2+1 =4**

अनुभाग ङ **1x5=5**

मानचित्र आधारित प्रश्न

34.1. भारत के दिए गए राजनीतिक मानचित्र पर निम्नलिखित को उपयुक्त संकेत और चिह्नों से अंकित कीजिये और उनके नाम लिखिए:

I. अमरावती - एक स्तूप 1

II. मगध महाजनपद 1

III. राखीगढ़ी- हड़प्पा स्थल 1

अथवा

लोथल-हड़प्पा स्थल

34.2 भारत के इसी राजनीतिक रेखा मानचित्र पर, 1857 के विद्रोह के केंद्रों को दो स्थानों को 'A' और 'B' के रूप में अंकित किया गया है। उन्हें पहचानें और उनके पास खींची गई रेखाओं पर उनके सही नाम लिखें। 2

नोट: निम्नलिखित प्रश्न केवल दृष्टिबाधित अभ्यर्थियों के लिए प्रश्न संख्या 34 के स्थान पर हैं।

34.1 सगुण (गुणों सहित) और निर्गुण (गुणों के बिना)। 2

34.2. (क) 700 1

या

(ख) तंजावुर 1

34.3 चंपारण, खेड़ा, अहमदाबाद, बनारस, अमृतसर, चौरी चौरा, लाहौर, बारदोली, दाण्डी, बम्बई , कराची (कोई दो)

70°0'0"E
80°0'0"E
90°0'0"E
100°0'0"E
40°0'0"N
30°0'0"N
20°0'0"N
10°0'0"N
DELHI
Rakhigarhi
A
Maghda
LOTHAL
B
Calcutta
AMRAVATI
Published by Survey of India